प्रातःक्लास 12.3.68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?

ओमशान्ति। बेहद का बाप सभी बच्चों को समझाते हैं। सभी को यह पैगाम पहुँचाना है कि बाप आये हैं। बाप धीय दे रहे हैं ; क्योंकि भक्ति–मार्ग में बुलाते हैं बाबा आओ, लिबरेट करो, दुःख से छुड़ाओ। तो बाप धीर्य देते हैं। बाकी थोड़ा रोज़ है। कोई की बीमारी छूटने पर होती है तो कहते हैं अभी ठीक हो जावेंगे। बच्चे भी समझते हैं इस छी–2 दुनियाँ में बाकी हम थोड़े रोज़ हैं। फिर हम नई दुनियाँ में जावेंगे। इसके लिए हमको लायक बनना है। फिर कोई भी रोग आदि तुमको नहीं सतावेंगे। बाप धीर्य देते हैं और कहते हैं थोड़ी मेहनत करो। और कोई मनुष्य नहीं जो ऐसे धीर्य दे। तुम सतोप्रधान थे, अभी तमोप्रधान हो गये हो। सारा झाड़, सभी मनुष्य तमोप्रधान हैं। अभी बाप आये हैं सतोप्रधान बनाने। सभी आत्माएँ पवित्र बन जावेंगी। कोई योगबल से, कोई सज़ाबल से। सज़ा भी बल है ना। सज़ाओ से जो पवित्र बनेंगे उनका पद कम हो जावेगा। तुम बच्चों को तो श्रीमत मिलती रहती है। कदम–2 पर श्रीमत मिलती रहती है। बाप कहते हैं मामेकं याद करो तो तुम्हारे पाप भस्म हो जावेंगे। अगर याद न करेंगे तो पाप सौगुणा बन जावेंगे ; क्योंकि पापात्मा बन तुम मेरी निन्दा कराते हो। मनुष्य कहेंगे इनको ईश्वर श्रीमत देते हैं, जो आसुरी चलन दिखाते रहते हैं। लाचारी भी होती है ना। बच्चे हार भी खाते हैं। अच्छे–2 बच्चे भी हार खाते हैं तो पाप कटते ही नहीं। फिर भूलना भी पड़ता है। यह बहुत छी–2 दुनियाँ है। इसमें सब कुछ होता रहता है। बाप को बुलाते ही हैं आकर बाबा हमको भविष्य नई दुनियाँ के लिए रास्ता बताओ। बाप जानते तो हैं ना। उस तरफ है पुरानी दुनियाँ, इस तरफ है नई दुनियाँ। तुम हो सेना। अभी तुम पुरुषोत्तम बनने लिए चल रहे हो। तुम्हारा उस पुरानी दुनियाँ से लंगर उठ गया है। तुम जहां जा रहे हो उस डेस्टीनेशन को ही याद करना है। बाप ने कहा है मेरे को याद करने से तुम्हारे कट उतरेंगे। या तो योगबल से या तो सज़ाएं। हरेक आत्मा प्योर तो ज़रूर बननी है। प्योर बनने बिगर वापस जा न सके। सभी को अपना–2 पार्ट मिला हुआ है। बाप कहते है अभी यह (तुम्हारा) अन्तिम जन्म है। मनुष्य कहते हैं कलियुग तो अजन छोटा बच्चा है। गोया मनुष्य अजन इससे भी दुःखी होंगे। तुम संगमयुगी ब्राह्मण समझते हो। यह दुःखधाम तो अभी खतम होना है। बाप धीर्य देते हैं। कल्प पहले भी बाप ने कहा था मामेकं याद करो तो तुम्हारे पापों के कट उतर जावेंगे। यह मैं गैरन्टी करता हूं। यह भी समझाते हैं कलियुग का विनाश होता है। सतयुग आना है ज़रूर। यह भी खातरी मिलती है। बच्चों को निश्चय भी ; परन्तु (याद) न ठहरने कारण भूल जाते हैं। कोई न कोई विकर्म कर देते है। कहते हैं बाबा क्रोध आ जाता है। इसको भी भूत कहा जाता है। 5 भूत दुःख देते हैं। इस पुराने रावण राज्य में इस बिचारे का हिसाब–किताब भी चुक्तु करना है। जिनको आगे कब काम विकार नहीं सताता था उनको भी इमर्ज हो जाती है बीमारी। कहते हैं आगे तो कब ऐसे विकल्प नहीं आये, अभी क्यों सताता है? यह ज्ञान है ना। ज्ञान सारी बीमारी को बाहर निकालता है। भक्ति सारी बीमारी को नहीं निकालती है। यह है ही अशुद्ध विकारी दुनियाँ। 100% पतित से फिर 100% पावन बनना होता है। 100% पतित, भ्रष्टाचारी से 100% पावन, श्रेष्ठाचारी बनना है। बाप कहते हैं मैं आया हूँ तुम बच्चों को शान्तिधाम–सुखधाम ले जाने। तुम सिर्फ मुझे याद करो और सृष्टि चक्र को फिराओ। कोई भी विकर्म न करो। जो गुण इन देवताओं में है ऐसी गुण धारण करनी है। बाबा कोई तकलीफ भी नहीं देते हैं। कोई–2 घरों में भी ईविल सोल होते हैं। तो आग लगाये देते। पत्थर मारते हैं। नुकसान करते हैं। मनुष्य ही सभी ईविल हैं ना। दुश्मनी होती है तो फिर स्थूल में भी कर्मभोग होता है। आत्मा एक/दो को दुःख देती है शरीर द्वारा। शरीर न है तो भी दुःख देते हैं। बच्चों ने देखा है घोस्ट जिसको कहते हैं, वह सफेद छाया माफिक देखने में आता है। यह होता है उनका कुछ ख़्याल नहीं करना होता है। तुम जितना बाप को याद करेंगे उतना सब ख़तम होता जावेगा। यह भी हिसाब–किताब है ना। घर में बच्चियाँ कहती है हम पवित्र रहना चाहते हैं। आत्मा कहती है ना। और ईविल सोल (अर्थात् जिनमें ज्ञान नहीं है) कहते हैं पवित्र न बनो। फिर झगड़ा हो पड़ता है।

कितना हंगामा होता है। अभी तुम पवित्र आत्मा बन रहे हो। वह हैं अपवित्र, तो कितना दुःख देते हैं। मार–मार कर हड्डियाँ तोड़ देते हैं। हैं तो आत्मा ना। उनको कहा जाता है ईविल आत्मा। तमोप्रधान हैं ना। शरीर से भी, तो बिगर शरीर भी दुःख देते हैं। ज्ञान तो है सहज। स्वदर्शन चक्रधारी बनना है। बाकी मुख्य है पवित्रता की बात। इसके लिए बाप को बहुत याद करना है प्यार से। अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो। रावण का(को) ईविल कहेंगे। इस समय यह दुनियाँ ही ईविल है। एक/दो से अनेक प्रकार के दुःख पाते ही रहते हैं। सभी की दवाई है एक। बाप कहते हैं मनमनाभव। ईविल आत्मा अनेक प्रकार के दुःख उठाती रहती है। ईविल पतित को कहा जाता है। पतित आत्मा में भी 5विकार अनेक प्रकार के होते हैं। कोई में विकार की आदत, कोई में गुस्से की, कोई में तंग करने की आदत, कोई में नुकसान करने की आदत होती है। कोई में विकार की आदत होती है तो सताते हैं। विकार न मिलने से क्रोध में आकर मारते भी हैं। यह दुनियाँ ही ऐसी है। तो बाप आकर धीर्य(धीर्य) देते हैं। हे आत्माएं, बच्चों धीर्य(धीर्य) धरो। मुझे याद करते रहो और दैवीगुण धारण करो। ऐसे भी नहीं कहते कि धंधा आदि न करो वा रिश्वत न लो वा किसको मारो नहीं । जैसे मिलिट्री वालों को मारना पड़ता है तो उन्हों को भी कहा जाता है .....शिवबाबा को याद कर गोली चलाओ। गीता के अक्षरों को उठाये वह समझते हैं हम युद्ध के मैदान में मरेंगे तो स्वर्ग में जावेंगे ; इसलिए खुशी से लड़ाई में जाते हैं ; परन्तु वह तो बात ही नहीं है। आत्मा लड़ाई का संस्कार ले जाती है तो उनको फिर लड़ाई में आना है। स्वर्ग में तो कोई जाता ही नहीं। अभी बाप कहते हैं तुम स्वर्ग में जा सकते हो। सिर्फ शिवबाबा को याद करो। याद एक शिवबाबा को ही करना है। तो स्वर्ग में ज़रूर जावेंगे। पतित बन कर फिर आवेंगे ज़रूर। बाप रहमदिल तो है ना। बाप समझाते हैं कोई भी विकर्म न करो तो तुम विकर्माजीत बनेंगे। यह ल.ना. विकर्माजीत हैं ना। फिर रावण राज्य में विकर्मी राजा बन जाते हैं। विक्रम सम्वत होता है ना। मनुष्यों को तो कुछ भी पता नहीं है। तुम बच्चे अभी जानते हो यह ल.ना. विकर्माजीत राजा बने हैं। कहेंगे विकर्माजीत नम्बरवन, फिर 2500 वर्ष बाद विक्रम सम्वत शुरू होता है। मोहजीत राजा की भी कहानी है ना। बाप कहते हैं नष्टो मोहा बनो। मामेकं याद करो तो पाप कटेंगे। जो 2500 वर्ष में पाप हुये हैं वह 50 वर्ष में तुम भस्म कर सतोप्रधान बन सकते हो। अगर योगबल न होगा तो फिर नम्बर पीछे हो जावेगा। माला तो बहुत बड़ी है। भारत की माला तो साफ है, जिस पर ही सारा खेल बना हुआ है। इसमें मुख्य है याद की बात। और कोई तकलीफ नहीं। भक्तिमार्ग में तो अनेक देवताओं साथ बुद्धि योग लगाते हैं। वह सभी हैं रचना। उनकी (याद) से कोई कल्याण नहीं होगा। बाप कहते हैं किसको भी याद न करो। मामेकं याद करो। जैसे भक्तिमार्ग में पहले तुम सिर्फ मेरी भक्ति करते (थे)। अभी पिछाड़ी में भी तुम मुझे याद करो। बाप कितना क्लीयर समझाते हैं, (आ)गे थोड़े ही तुम जाानते थे। अभी तुमको ज्ञान मिला है। बाप कहते हैं और संग बुद्धि का योग तोड़ मामेकं याद करो तो योग अग्नि से तुम्हारे विकर्म भस्म हो जावेंगे। पाप तो बहुत करते आये हो। काम कटारी चलाते (ए)क/दो को दुःख देते आये हो। मूल बात है ही काम कटारी की। यह भी ड्रामा है। ऐसे भी नहीं कहेंगे यह (ड्रा)मा बना ही क्यों? यह तो अनादि खेल है। इसमें मेरा भी पार्ट है। ड्रामा कब बना, कब पूरा हुआ। आत्मा की जो प्लेट है वह कब घिसती नहीं। आत्मा अविनाशी है। उनमें पार्ट भी अविनाशी भरा हुआ। ड्रामा भी अविनाशी कहा जाता है। बाप तो पुनर्जन्म में नहीं आते हैं। वही आकर सभी राज़ समझाते हैं। (सृ)ष्टि के आदि, मध्य, अंत का राज़ और कोई बता न सके। न बाप का ऑक्युपेशन, न आत्मा का, कुछ भी नहीं जानते हैं। यह सृष्टि का चक्र फिरता रहता है। अभी पुरुषोत्तम संगमयुग है। जब सभी मनुष्यय मात्र (उत)तम पुरुष बन जाते हैं। शान्तिधाम में भी आत्माएँ सभी पवित्र ,उत्तम बन जाती हैं। शान्तिधाम पावन है ....। नई दुनियाँ भी पवित्र है। वहां शान्ति तो है ही। फिर शरीर मिलने से पार्ट बजाते हैं। यह हम जानते

हैं हरेक को पार्ट मिला हुआ है। वह तो हमारा घर है। शान्तिधाम में रहते हैं। यहां तो पार्ट बजाना है। अभी बाप कहते हैं भक्तिमार्ग में तुमने मेरी अव्यभिचारी पूजा की। दुःखी नहीं थे। अभी व्यभिचारी भक्ति में आने से तुम दुःखी बने हो। अभी बाप कहते हैं दैवीगुण धारण करो। फिर भी आसुरी गुण क्यों? बाप को बुलाया है हमको पावन बनाओ तो फिर पतित क्यों बनते हो? इसमें भी खास काम को तो ज़रूर जीतना है। तो तुम जगत–जीत बनेंगे। यहां किसको भी पता नहीं है कि अभी रामराज्य नहीं है। अभी तुम समझते हो तो गाली देते हैं। आत्मा शरीर द्वारा गाली देंगे। ईविल सोल है ना। ईविल प्योर सोल को माथा टेकते हैं। उनके लिए कहते हैं पुजारी। वह परमात्मा के लिए कहते हैं आपे ही पूज्य, आपे ही पुजारी। गोया उनको भी नीचे ले जाते हैं। बाबा को कहते हैं आपकी सोल प्योर भी है तो इवी(वि)ल भी हैं। बाप के लिए ऐसा कहना यह तो पाप हो गया। ऐसे–2 पाप करते–2 महाविनाशकारी दुनियाँ बन जाती है। गरूण पुराण में भी रौरव नर्क कहते हैं, जहां बिच्छू–टिण्डन सब काटते रहते हैं। शास्त्रों में क्या बैठ दिखाया है। मनुष्य तो कुछ भी समझते नहीं। किसको आसुरी बुद्धि कहो तो बिगर(ड़) जाते हैं। बिल्कुल जैसे कि ईडियट बुद्धि हैं। बन्दर सेना भी दिखाते हैं ना। बन्दर सेना ली रावण को भगाने लिए। तुम समझते हो हम सेना हैं। यह रावण राज्य को खतम कर देते हैं। तुम्हारा यह नाम क्यों रखा है? क्योंकि भल सूरत मनुष्य की है, सीरत बन्दर की हो गई है। तुम खुद भी जानते हो हम बन्दर से भी बदतर थे। अभी बाप हमको ऐसा ऊँच बनाते हैं। यह भी बाप ने समझाया है यह शास्त्र आदि सब भक्तिमार्ग के हैं। इनसे कोई भी मेरे साथ नहीं मिलेंगे। यह शास्त्र आदि पढ़ते–2 तमोप्रधान बन जाते हैं ; इसलिए मुझे बुलाते हैं। आकर पावन बनाओ। तो पतित ठहरे ना; इसलिए (बाबा) स्लोगन भी बनाते रहते हैं कि अपने से पूछे कि हम कहाँ के निवासी हैं। मनुष्यों की तो बुद्धि ऐसी है जो कुछ भी समझते नहीं। निश्चयबुद्धि तो विजयन्ति हो जाते। रावण पर विजय पाकर रामराज्य में आ जाते हैं। बाप कहते हैं मुख्य है काम विकार पर जीत पाना। इस पर ही कितना हंगामा होता है। गाते भी हैं अमृत छोड़ विख क्यों खाते हो? अमृत नाम सुन वह समझते हैं गऊमुख से अमृत निकलता है। अरे, गंगा जल को थोड़े ही अमृत जल कहा जाता हैं बाकी गऊमुख आदि कुछ है थोड़े ही। स्त्री तो पति को भी ईश्वर समझती। उनके चरण धोकर उसको अमृत समझकर पीती है। अगर अमृत है तो हीरे समान बने ना। यह तो बाप ज्ञान देते हैं। जिससे तुम हीरे समान बनते हो। पानी का नाम कितना बाला कर दिया है। तुम ब्राह्मणों को किसको भी पता नहीं है। वह कोड़व(कौरव)–पाण्डव कहते हैं; परन्तु पाण्डव को ब्राह्मण थोड़े ही समझते हैं। गीता में ऐसे अक्षर हैं नहीं जो पाण्डव को ब्राह्मण सम(झें)। बाप बैठ सभी जो भी वेद–शास्त्र आद(दि) हैं सबका सार समझाते हैं। बच्चों को कहते हैं शास्त्रों में जो कुछ पढ़ा है और जो हम सुनाते हैं जज करो। तुम समझते हो आगे हम सभी रांग सुनते थे। अनराईटियस थे। अभी अनराईटियस से राइटियस बनते रहते हैं। फिर 21 जन्म राईटियस रहेंगे। रांग सुनने से 63 जन्म रॉंग रहते हैं। दुनियाँ ही राईटियस और अनराईटियस है। राईटियस राम बनाते हैं–अनराईटियस रावण बनाती(ता) है। बाप ने समझाया है तुम सब सीताएँ अथवा भक्तियाँ हो। भ(ि)क्त का फल देने वाला है राम। भगवान। कहते हैं मैं आता ही हूँ फल देने। तुम जानते हो हम स्वर्ग में सुख भोगेंगे। बाकी सभी शान्तिधाम में रहते हैं। शान्ति तो मिलती है ना। वहां विश्व में सुख–शान्ति–पवित्रता सब है। शान्तिधाम में सिर्फ शान्ति ही है। सुखधाम में शान्ति भी तो सुख भी है। सभी कहते रहते हैं विश्व में शान्ति हो। तुम प्रदर्शनी में भी दिखाते हो इनके राज्य में विश्व में सुख–शान्ति सब था। विश्व में शान्ति थी तब तो मांगते हैं ना। जब एक धर्म था तो विश्व में शान्ति थी। तुम कितना समझाते हो फिर भी समझते नहीं। लिखते हैं 5–10 आते हैं। उनमें भी कोई ठहरते हैं ,कोई नहीं ठहरते हैं। बाप कहते हैं पिछाड़ी में आवेंगे। तुम हार्ट फेल मत हो जाओ। एक ही हट्टी है। कहां जावेंगे? कोई–2 दुकानदार होते हैं ना। एक बात पर ही रहते हैं। एक ही दाम। फर्स्ट क्लास चीज़े मिलेंगी। यह शिवबाबा की हट्टी है। वह तो है निराकार। ब्रह्मा भी ज़रूर चाहिए ना।

तुम कहलाते हो ब्रह्माकुमार और कुमारियाँ। शिव कुमारियाँ तो नहीं कहला सकते। ब्राह्मण बनने बिगर देवता कैसे बन सकते है? बहुत हैं जो ब्रह्मा को ही नहीं मानते। डायरैक्ट शिवबाबा से लेने चाहते हैं। मिलता कुछ भी नहीं। बहुत हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। कहते हैं हम तो शिवबाबा को ही याद करते हैं। छोड़ो ब्रह्मा को। ऐसे भी हैं जो ब्रह्मा को नहीं मानते। वह हुआ शूद्र। शूद्र से तो संग भी नहीं। बात भी नहीं करनी चाहिए। ईविल है ना। समझते हैं हमको डायरैक्ट शिव से मिलता है। मिलेगा कुछ नहीं। यह पुरुषोत्तम संगमयुग है ही ब्राह्मण कुल का। ब्राह्मण नहीं कहलावेगे तो गोया शूद्र ही ठहरे। ब्राह्मण और शूद्र आपस में मिल न सके। वह हंस, वह बगुला। ब्राह्मण कुल में ही न आया तो हंस बन कैसे सकेंगे? कुछ भी समझते नहीं। भूले हुये हैं। देहअभिमानी है। सिखलाने वाले टीचर बिगर देहीअभिमानी बन न सकें। तकदीर में न है तो फिर ऐसे–2 उल्टी(टे) ख़्यालात आते हैं। ब्रह्मा से पढ़ेंगे नहीं, पत्र न लिखेंगे। ब्रह्मा से न पड़(ट)ती है तो शिव के(की) भी उनसे नहीं पड़े(टे)गी। शिवबाबा कहेंगे मेरे बच्चे न पड़(ट)ती है तो मैं फिर क्या करूँगा? ब्रह्मा को न मानने वाले वर्थ नॉट अपेनी हैं। ब्रह्मा का बन फिर उनसे कनैक्शन न रखते हैं तो गोया ट्रेटर हो गये। यह बहुत समझने की बातें हैं। न समझने से मूँझ जाते हैं। ब्राह्मण कुल तो चाहिए ना। शूद्र से सीधा (दे)वता कैसे बनेंगे? ब्राह्मण कुल तो ज़रूर चाहिए। ब्राह्मणों का ही हीरे जैसा जीवन है। ब्रह्मा का बच्चा अपन को न समझा तो हीरे जैसा थोड़े ही बन सकेंगें। ब्राह्मणों को ऊँच पद पाना है तो ब्रह्मा को पहले मानना पड़े। बाबा खुद कहते हैं ब्रह्मा द्वारा कि मामेकं याद करो; परन्तु ब्राह्मण कुल तो ज़रूर चाहिए ना। ब्राह्मण साथ कनैक्शन नहीं तो बाकी क्या रहा? किसके साथ कनैक्शन नहीं उनको कहा जावेगा निधणका। ब्रह्मा मुँह देखे तो शिव का भी मुँह देखे। ऐसे भी चर्ये–खर्ये होते हैं। किसको ज्ञान भी देते होंगे तो उनको तीर नहीं लगता होगा। बाप हर तरफ से समझाते रहते हैं। कोई भी भूल न हो। चढ़ाई बहुत ऊँच है। पांव खिसक गया तो खतम। विकार में गया तो गोया ऊपर से नीचे गिरा। देहभिमान के पीछे ही और सब विकार आते हैं। पहले है देहभिमान फिर काम, क्रोध.....देहअभिमान होने से ही विकार सताते हैं। देही–अभिमानी हो तो सता न सके। मंज़िल है। देहअभिमानी को ही भूत सताते हैं। तो टीचर जो पढ़ाते हैं उनको कितना मान देना चाहिए। कितना याद करना चाहिए। तब ही बाप कहते हैं। भल काम–काज करो गृहस्थ व्यवहार में रहते यह पढ़ाई पढ़ो। कोई–2 शादी के (बाद) भी पढ़ते हैं। तुम भी गृहस्थ व्यवहार में रहते पढ़ते हो ना। बेहद का बाप पढ़ाते हैं तो कितना अच्छी (रीति) पढ़ना चाहिए। कोई–2 समय बहुत अच्छी गुह्य–2 प्वाइन्ट् निकलती हैं। पढ़ते नहीं हैं तो फिर धारणा नहीं (हो)ती। कच्चे पड़ जावेंगे। बहुत कच्चे पड़ जाते हैं, धारणा ही नहीं होती। विकार में फंसे हुये हैं। देहाभिमान के ... ही और सब आते हैं; इसलिए बाप कहते हैं देहीअभिमानी बनो। तुम नंगे आये थे, फिर सतयुग में तुम्हारा (शुद्ध) सम्बन्ध रहा। अभी है अशुद्ध सम्बन्ध। फिर बाप को याद करना है। कितना सहज है इसका नाम ही है (रा)जयोग सहज ज्ञान अर्थात् सहज पढ़ाई और सहज याद। बेहद का बाप बेहद का सुख देंगे तो क्यों नहीं (उ)नको याद करेंगे। बाप कितना अच्छी रीत समझाते हैं। फिर भी विकारों में गिर पड़ते हैं। क्रोध में आ जाते हैं, लोभ में आ जाते हैं। अच्छा बच्चों को गुडमॉर्निंग और नमस्ते।

डायरैक्शन– खास ब्राह्मणियों प्रति,

मधुबन में पार्टी ले आने के पहले हरेक स्टुडेंट का निश्चय पत्र भेजना है। छुट्टी मिलने पर वह आ सकते हैं। बच्चों को भी बिगर छुट्टी नहीं लाना है। ओमशांति।